इकाई 18 काव्य वाचन एवं विश्लेषण : झाँसी की रानी

इकाई की रूपरेखा

18.0 उद्‌देश्य

18.1 प्रस्तावना

18.2 चयनित कविता का पाठ एवं विश्लेषण

18.3 उपयोगी पुस्तकें

18.4 बोध प्रश्नों के उत्तर

18.0 उद्‌देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- इस इकाई को पढ़ने के बाद आप 'झाँसी की रानी' कविता की विस्तृत व्याख्या समझ सकेंगी / सकेंगे;
- सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं के विषय के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे / सकेंगी;
- इस कविता के माध्यम से राष्ट्रीय धारा की कविता के बारे में जान सकेंगे / सकेंगी;
- सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं के काव्य सौंदर्य और भाषा रचना की विशेषताओं को समझ सकेंगे / सकेंगी;
- सुभद्रा कुमारी चौहान के जीवन और रचना कर्म से परिचित हो सकेंगी / सकेंगे और
- 'झाँसी की रानी' कविता पढ़ कर झाँसी की रानी के जीवन और 1857 में उनके भाग लेने की कहानी का संक्षिप्त ज्ञान हासिल कर सकेंगी / सकेंगे

18.1 प्रस्तावना

सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म 16 अगस्त 1904 इलाहाबाद के निकट निहालपुर नामक गांव में एक जमींदार परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम रामनाथ सिंह था। बाल्यकाल में उनकी प्रारंभिक शिक्षा–दीक्षा पिता की देख–रेख में हुई। सन 1919 में उनका विवाह खंडवा के ठाकुर लक्ष्मण सिंह के साथ हो गया। विवाह के उपरांत पिता का घर छोड़ कर वे जबलपुर आ गयी। बाल्य काल में ही उनके भीतरं देश प्रेम की भावना पैदा हो गयी थी। उस जमाने में, मात्र 17 वर्ष की उम्र में, विवाह के मात्र दो वर्ष बाद ही, 1921 में वे गांधी जी के असहयोग आंदोलन में हिस्सा लेने चली गयी थीं। वे पहली महिला थीं जिन्होंने असहयोग आंदोलन में हिस्सा लिया। उन्हें दो बार जेल भी जाना पड़ा। 44 साल की कम उम्र में ही, फरवरी 1948 को, एक कार दुर्घटना में उनका देहांत हो गया था।

स्वाधीनता संग्राम की सेनानी होने के साथ–साथ सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्रवादी धारा की एक अच्छी रचनाकार भी थीं। 1857 के संग्राम में वीरता पूर्वक अंग्रेजों से लोहा लेने वाली झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की रणगाथा को आधार बनाकर उन्होंने एक लम्बी कविता लिखी,

जिसके कारण एक राष्ट्रवादी धारा के कवि के रूप में उन्हें खूब प्रसिद्धि मिली। अच्छी कवि होने के साथ–साथ वे एक अच्छी कथाकार भी थीं। जेल यात्राओं के दौरान मिलने वाली यातनाओं का वर्णन उनकी कहानियों में चित्रत हुआ है। उनकी शैली वातावरण–चित्रण प्रधान तथा भाषा सरल ओजपूर्ण और काव्यात्मक है।

रचनाएं–

कविता संग्रह– मुकुल, त्रिधारा

कहानी संग्रह–

बिखरे मोती –1932

उन्मादिनी –1934

सीधे–साधे चित्र –1947

बाल–साहित्य –झाँसी की रानी, कदम्ब का पेड़, सभा का खेल

कविता संकलन–

'मुकुल तथा अन्य कविताएँ'–(बाल कविताओं के अतिरिक्त संकलित–असंकलित समस्त कविताओं का संग्रह, प्रकाशक–हंस प्रकाशन, इलाहाबाद।)

कथा संकलन–सीधे–साधे चित्र–1983 (संकलित–असंकलित समस्त कहानियों का संग्रह। प्रकाशक– हंस प्रकाशन, इलाहाबाद)

सम्मान –

शेकसरिया पारितोषिक (1931) मुकुल (कविता–संग्रह) के लिए

शेकसरिया पारितोषिक– (1932) बिखरे मोती (कहानी–संग्रह) के लिए (दूसरी बार),

अन्य सम्मान–1 भारतीय डाकतार विभाग ने 6 अगस्त 1976 को सुभद्रा कुमारी चौहान के सम्मान में 25 पैसे का एक डाक–टिकट जारी किया ।

28 अप्रैल 2006 को भारतीय तटरक्षक सेना द्वारा एक तटरक्षक जहाज का नाम सुभद्रा कुमारी चौहान रखा गया।

18.2 चयनित कविता का पाठ एवं विश्लेषण

एक

झाँसी की रानी
सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।
चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी,

बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

कानपुर के नाना की, मुँहबोली बहन छबीली थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी,
नाना के सँग पढ़ती थी वह, नाना के सँग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी।
वीर शिवाजी की गाथायें उसको याद जबानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,
नकली युद्ध–व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना ये थे उसके प्रिय खिलवाड़।
महाराष्ट्र–कुल–देवी उसकी भी आराध्य भवानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मीबाई झाँसी में,
राजमहल में बजी बधाई खुशियाँ छाई झाँसी में,
सुघट बुंदेलों की विरुदावलि–सी वह आयी थी झांसी में।
चित्रा ने अर्जुन को पाया, शिव को मिली भवानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजियारी छाई,
किंतु कालगति चुपके–चुपके काली घटा घेर लाई,
तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाई,
रानी विधवा हुई, हाय! विधि को भी नहीं दया आई।
निसंतान मरे राजाजी रानी शोक–समानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

बुझा दीप झाँसी का तब डलहौजी मन में हरशाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया,
फौरन फौजें भेज दुर्ग पर अपना झंडा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया।
अश्रुपूर्ण रानी ने देखा झाँसी हुई बिरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

अनुनय विनय नहीं सुनती है, विकट शासकों की माया,
व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया,
डलहौजी ने पैर पसारे, अब तो पलट गई काया,
राजाओं नवाबों को भी उसने पैरों ठुकराया।
रानी दासी बनी, बनी यह दासी अब महरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

छिनी राजधानी दिल्ली की, लखनऊ छीना बातों–बात,
कैद पेशवा था बिठूर में, हुआ नागपुर का भी घात,
उदयपुर, तंजौर, सतारा, कर्नाटक की कौन बिसात?
जब कि सिंध, पंजाब ब्रह्म पर अभी हुआ था वज्र–निपात।
बंगाल, मद्रास आदि की भी तो वही कहानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

रानी रोयीं रनिवासों में, बेगम गम से थीं बेजार,
उनके गहने कपड़े बिकते थे कलकत्ते के बाजार,
सरे आम नीलाम छापते थे अंग्रेजों के अखबार,
नागपुर के जेवर ले लो लखनऊ के लो नौलखा हार।
यों परदे की इज्जत प्रदेशी के हाथ बिकानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

कुटियों में भी विषम वेदना, महलों में आहत अपमान,
वीर सैनिकों के मन में था अपने पुरखों का अभिमान,
नाना धुंधूपंत पेशवा जुटा रहा था सब सामान,
बहिन छबीली ने रण–चण्डी का कर दिया प्रकट आहवान।
हुआ यज्ञ प्रारम्भ उन्हें तो सोई ज्योति जगानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

महलों ने दी आग, झोपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी,
यह स्वतंत्रता की चिनगारी अंतरतम से आई थी,
झाँसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छाई थी,
मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी,
जबलपुर, कोल्हापुर में भी कुछ हलचल उकसानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

इस स्वतंत्रता महायज्ञ में कई वीरवर आए काम,
नाना धुंधूपंत, ताँतिया, चतुर अजीमुल्ला सरनाम,

अहमदशाह मौलवी, ठाकुर कुँवरसिंह सैनिक अभिराम,
भारत के इतिहास गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम।
लेकिन आज जुर्म कहलाती उनकी जो कुरबानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

इनकी गाथा छोड़, चले हम झाँसी के मैदानों में,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानों में,
लेफ्टिनेंट वाकर आ पहुँचा, आगे बढ़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वंद असमानों में।
जख्मी होकर वाकर भागा, उसे अजब हैरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

रानी बढ़ी कालपी आई, कर सौ मील निरंतर पार,
घोड़ा थक कर गिरा भूमि पर गया स्वर्ग तत्काल सिधार,
यमुना तट पर अंग्रेजों ने फिर खाई रानी से हार,
विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार।
अंग्रेजों के मित्र सिंधिया ने छोड़ी राजधानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

विजय मिली, पर अंग्रेजों की फिर सेना घिर आई थी,
अब के जनरल स्मिथ सम्मुख था, उसने मुँह की खाई थी,
काना और मंदरा सखियाँ रानी के संग आई थी,
युद्ध क्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचाई थी।
पर पीछे ह्यूरोज आ गया, हाय ! घिरी अब रानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

तो भी रानी मार काट कर चलती बनी सैन्य के पार,
किन्तु सामने नाला आया, था वह संकट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा, नया घोड़ा था, इतने में आ गये सवार,
रानी एक, शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार–पर–वार।
घायल होकर गिरी सिंहनी उसे वीर गति पानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

रानी गई सिधार चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आयी बन स्वतंत्रता–नारी थी,

दिखा गई पथ, सिखा गई हमको जो सीख सिखानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

जाओ रानी याद रखेंगे ये कृतज्ञ भारतवासी,
यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतंत्रता अविनासी,
होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फाँसी,
हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी।
तेरा स्मारक तू ही होगी, तू खुद अमिट निशानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

संदर्भ और प्रसंग–

सुभद्राकुमारी चौहान की यह प्रसिद्ध कविता उनके काव्य संग्रह 'त्रिधारा' में संकलित है। यह उनकी सर्वश्रेष्ठ कविता है। इस कविता में कवयित्री ने 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई द्वारा दिखाए गए अदम्य शौर्य का उल्लेख किया है। उस युद्ध में लक्ष्मीबाई ने अपने अद्‌भुत युद्ध कौशल और साहस का परिचय देकर बड़े–बड़े योद्धाओं को भी हैरान कर दिया था। उनकी वीरता और पराक्रम से उनके दुश्मन भी प्रभावित थे। इस कविता में बताया गया है कि उन्हें बचपन से ही तलवारबाजी, घुड़सवारी, तीरंदाजी और निशानेबाजी का शौक था। इस कविता में झाँसी के युद्ध का इतिहास भी बड़े ही काव्यात्मक ढंग से गुंथा हुआ है। इसे काव्येतिहास की संज्ञा भी दी जा सकती है।

झाँसी की रानी का बचपन का नाम मनु था। परन्तु उनके मुंहबोले भाई नाना उन्हें छबीली कहते थे। वे बहुत छोटी उम्र में ही युद्ध–विद्या में पारंगत हो गई थीं। अपने पति की असमय मृत्यु के बाद उन्होंने एक कुशल शासक की तरह झाँसी का राजपाट संभाला तथा अंतिम सांस तक अपने राज्य को बचाने के लिए अंग्रेजों से अत्यंत वीरता से लड़ती रहीं। उनके पराक्रम की प्रशंसा उनके शत्रु भी करते थे।

व्याख्या–

प्रथम पद में लेखिका ने बताया है कि 1857 के समय भारत के सभी राजवंशों में अंग्रेजों को भारत से दूर भगाने की जागरूकता आने लगी थी। एक तरह से कहें तो बूढ़ा भारत एक बार फिर से नयी जवानी और जोश से भर उठा था। 1857 के संग्राम में रानी लक्ष्मी बाई के साहस को देख हर भारतवासी जोश से भर उठा। अंग्रेजों को दूर भगाने की भावना पूरे देश के मन में पैदा होने लगी। लक्ष्मी बाई की तलवार का जौहर देख कर सबके मन में आजादी की कीमत समझ में आने लगी थी।

इस पद में बताया गया है कि बचपन में ही रानी लक्ष्मीबाई की अद्‌भुत प्रतिभा से प्रभावित होकर कानपुर के नाना साहब ने उन्हें अपनी मुंह–बोली बहन बना लिया था। नाना साहब उन्हें युद्ध कला भी सिखाया करते थे। लक्ष्मीबाई को बचपन से ही गुड्डे–गुड़ियों के खेल से कोई प्रेम नहीं था। उन्हें तीर, तलवार, बरछी चलाना सीखने में मजा आता था।

कवयित्री बताती हैं कि लक्ष्मीबाई बचपन से ही मानों वीरता की अवतार थीं। व्यूह–रचना, तलवारबाजी, लड़ाई के अभ्यास के दौरान दुर्ग तोड़ने जैसे युद्ध विषयक खेलों में सिद्ध हो

चुकी थीं। मराठा कुल की बेटी होने के कारण वे मराठाओं की कुल देवी भवानी की भक्त थीं। धार्मिक कार्यो में भी उनकी रूचि थी।

इस पद से पता चलता है कि लक्ष्मीबाई का विवाह झाँसी के राजा श्री गंगाधर राव के साथ हुआ था। लेखिका ने इसे बड़े ही सुंदर ढंग से वीरता से वैभव की सगाई कहा है। लक्ष्मीबाई और गंगाधर की जोड़ी की तुलना शिव–पार्वती और अर्जुन–चित्रा की जोड़ी से करके यह बताने का प्रयास किया है कि दोनों की जोड़ी बहुत उत्तम थी। विवाह के उपरांत झांसी के राजमहल में आई खुशियों का इस बंद में बड़ा सुंदर वर्णन हुआ है।

कठिन शब्द

सिंहासन–राजगद्दी, **भृकुटी**– भौंह, **फिरंगी**–अंग्रेज, **नाना**–असली नाम धोडूपंत, नाना साहेब, **कृपाण**–तलवार, **पुलकित**–प्रसन्न, **वार**–आक्रमण, **दुर्ग**–किला, **आराध्य**–पूजा के योग्य, **वैभव**–धन और ताकत, **विरूदावलि**–स्वागत में बजाया जाने वाला बाजा, **उदित**–उत्पन्न, **मुदित**–खुश, **लावारिस**–जिसका कोई मालिक न हो, **अनुनय–विनय**–प्रार्थना, **विकट**–कठोर, **बज्र–निपात**– भारी दुख आ पड़ना, **रण–चंडी**–क्रोधोन्मत्त दुर्गा, **वीरवर**–श्रेष्ठ वीर, **द्वंद्व**–आमने सामने का युद्ध, **जख्मी**–घायल, **तट**–किनारा, **सम्मुख**–सामने, **सिधार जाना**– मर जाना, **मनुज**–मनुष्य की संतान, **कृतज्ञ**–किसी के उपकार को याद रखना, **अमिट**–जिसे कभी मिटाया या नष्ट न किया जा सके,

इस पद में सुभद्रा कुमारी चौहान ने लक्ष्मीबाई के जीवन के दुर्भाग्य का वर्णन किया है। रानी लक्ष्मी बाई के बहू बन कर आने के बाद झाँसी के राजमहल में चारों तरफ खुशियों की बहार आ गयी थी। लेकिन यह खुशी बहुत दिन तक नहीं रह सकी। पति गंगाधर राव की मौत हो गयी। पति की असमय मृत्यु के बाद रानी अत्यंत दुखी थीं। निःसंतान रह जाने से उनका दुख और भी साल रहा था। पति की मृत्यु के बाद वे बिल्कुल अकेली रह गई थीं। झाँसी को संभालने का दायित्व अब उनके कंधों पर आ गया था।

इस पद में बताया गया है कि झाँसी के राजा की असमय मृत्यु के बाद डलहौजी को जब राजा के निःसंतान होने की खबर मिली तो उसके मन में झाँसी पर कब्जा करने का लालच आ गया। उसने सेना भेज कर झाँसी के किले पर अपना झंडा लगा दिया और झाँसी को लावारिस समझ कर खुद को उसका शासक होने की घोषणा कर दी।

इस पद में अंग्रेजों की मतलबपरस्ती को याद करते हुए बताया गया है कि कोई समय था, ये अंग्रेज लोग व्यापारी बनकर आए थे। पहले ये यहां के सभी बड़े–बड़े राजा–महाराजाओं और रानियों से दया और सहायता की भीख मांगते थे। लेकिन अब तो डलहौजी ने पूरे भारत में अपना राज्य जमाना शुरू कर दिया है। फिर जैसे–जैसे अंग्रेज ताकतवर होते गये, उनका ही राज्य हड़पना शुरू कर दिया। रानियों को दासी बनाने पर आमादा हो गया। लेकिन झाँसी की रानी अन्य राजा–रानियों से विपरीत थीं और उन्होंने विषम परिस्थितियों में भी एक महारानी की तरह झाँसी को संभाला।

इस पद में अंग्रेजों द्वारा एक–एक करके हड़प लिये गये राज्यों का नाम गिनाते हुए बताया गया है कि अंग्रेजों ने किस तरह बातों–बातों में इन राज्यों को छीन कर अपना बना लिया। राज्यों के नाम इस प्रकार है–दिल्ली, लखनऊ, बिठुर, नागपुर, उदयपुर, तंजौर, सतारा,

कर्नाटक, सिंध प्रांत, पंजाब, बंगाल और मद्रास। अर्थात् ऐसा कोई क्षेत्र नहीं बचा था, जहां बेईमान अंग्रेजों ने अपना अधिकार नहीं जमाया हो।

इस पद में निर्लज्ज अंग्रेजों की क्रूरता का वर्णन है। अंग्रेज राज्यों पर कब्जा करके राजाओं तथा नवाबों की हत्या कर देते थे। उनकी रानियां बेजार रोती रहती थीं और ये निर्दयी अंग्रेज उनके गहनों को कलकत्ता के बाजारों में खुले आम बेचते थे और बेगमों की इज्जत से भी खिलवाड़ करते थे। लखनऊ की बेगम हों, या कलकत्ता और नागपुर की रानियां, सबके साथ उनका व्यवहार अत्यंत क्रूर और निर्लज्ज था। रानियों के कपड़े और जेवर तक छीन कर नीलाम कर दिए जाते थे। इन अंग्रेजों के हाथ रानियों की इज्जत बिक जाती थी। लेकिन झाँसी की रानी अपनी प्रतिष्ठा के लिए लड़ने मरने को तैयार थी।

कवयित्री ने इस पद में कहा है कि गरीब और अमीर सब अंग्रेजों के अत्याचार और अपमान से पीड़ित थे। लेकिन वीरों के मन में देश के लिए स्वाभिमान भरा था। युद्ध की तैयारी कर रहे नाना के साथ मिल कर बहन लक्ष्मीबाई रणचण्डी की तरह युद्ध के मैदान में उतर आई। देश में आजादी की बुझी हुई ज्वाला फिर से जल चुकी थी। सबके मन में विद्रोह की चिंगारी धधक रही थी।

झाँसी की रानी कविता के इस पद में यह बताया गया है कि विद्रोह की चिंगारी देश के हर राज्य में सुलग रही थी, चाहे वो झाँसी हो या लखनऊ। दिल्ली, मेरठ, कानपुर तथा पटना के राजाओं ने भी पूरा साथ दिया। साथ ही साथ जबलपुर और कोल्हापुर जैसे बड़े शासकों ने भी सन 1857 की क्रांति में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया था।

इस पद में हमारे स्वतंत्रता संग्राम में नाना धोडूपंत, तांतिया, चतुर अजीमुल्ला सरनाम, अहमदशाह मौलवी, ठाकुर कुंवर सिंह, तथा सैनिक अभिराम आदि अनेक वीर अंग्रजों से लोहा लेते हुए शहीद हो चुके थे। इनके नाम इतिहास में हमेशा के लिए अमर हो गये। लेकिन ये अंग्रेज इन वीरों की कुर्बानियों को अपराध बताकर फाँसी की सजा सुना देते थे।

इस पद में लेखिका कहती हैं कि अब यह कहानी यहीं छोड़ हम उस युद्ध के मैदान का वर्णन करने जा रहे हैं, जिसमें रानी लक्ष्मी बाई मर्दों के बीच एक बहादुर मर्द की तरह अंग्रजों की सेना का मुकाबला कर रही थीं। लक्ष्मीबाई का लेफ्टिनेंट वॉकर से घमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध में वाकर लक्ष्मीबाई के तलवारों के आगे टिक नहीं पाया। लक्ष्मीबाई का रणकौशल देख वह हैरान रह गया।

इस पद में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की वीरता का अद्भुत वर्णन है। कवयित्री ने बताया है कि सौ मील घोड़े पर बैठकर अंग्रेजों को खदेड़ती हुईं रानी यमुना तट तक ले आईं और अंग्रेज वहां रानी से पराजित हुए। परंतु यहां पर उनके घोड़े ने वीरगति प्राप्त कर ली अर्थात वो मर गया। किन्तु इसके बाद भी उन्होंने ग्वालियर पर भी अपना अधिकार जमाया, जहां के राजा सिंधिया थे उन्होंने अंग्रेजों के डर से उनसे मित्रता कर ली थी और अपनी राजधानी को छोड़कर वहां से चले गए थे।

सुभद्रा कुमारी चौहान ने इस पद में बताया है कि इसके बाद सेना की कमान जनरल स्मिथ ने संभाल ली थी। उधर रानी लक्ष्मीबाई का साथ देने के लिए उनकी दो सहेलियाँ काना और मंदरा भी मैदान में उतर गई थीं। इन तीनों ने अपनी वीरता और साहस के दम पर कई अंग्रेज सैनिकों की लाशें बिछा दी थी। परंतु तभी पीछे से जनरल ह्यूरोज ने आकर रानी को घेर लिया था फिर भी रानी बच निकली थीं।

रानी ह्यूरोज को परास्त कर निकलने में सफल तो हो गयीं थीं किन्तु कुछ ही दूर आगे बढी थीं कि रास्ते में अचानक उनके सामने एक चौड़ा नाला आ गया। उनका घोड़ा नया था। पार नहीं कर पाया और वहीं अड़ गया। रानी को अकेला पाकर शत्रुओं ने चारों तरफ से आक्रमण कर दिया। रानी ने भीषण युद्ध किया। किन्तु शत्रु के प्रहार से बच न सकीं और वहीं वीर गति को प्राप्त हो गयीं।

इस पद में वीर गति को प्राप्त हो चुकी रानी की दिव्यता का वर्णन करते हुए कवयित्री ने बड़े ही मार्मिक शब्दों में लिखा है कि रानी परलोक सिधार चुकी थीं, परन्तु उनका चेहरा दमक रहा था। उनकी उम्र केवल तेईस साल थी। इतनी छोटी–सी उम्र में वह एक अवतारी–नारी की तरह आकर हम सभी देशवासियों को जीवन का सही मार्ग दिखा गई थीं। क्रांति का बीज सही मायनों में उन्होंने ही देशवासियों के मन में बोया था।

अंतिम बंद में सुभद्रा कुमारी चौहान लिखती हैं कि हे रानी! भारतवासी तुम्हारे इस बलिदान को हमेशा याद रखेंगे। इतिहास भले चुप रह जाय, सच को चाहे सूली पर लटका दिया जाए, अंग्रेज तोप के गोलों से झाँसी को भले ही मिटा दे, लेकिन झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई देशवासियों के मन में हमेशा बसी रहेंगी। उनका बलिदान इतिहास में हमेशा अमर रहेगा। उनका कोई स्मारक बने या ना बने, लेकिन वीरता और साहस का जो उदाहरण उन्होंने पेश किया उसे पीढ़ियां याद करेंगी।

काव्य सौष्ठव–

- कविता इतिवृत्तात्मक शैली में लिखी गयी है। लक्ष्मी बाई के जीवन और युद्ध का इतिहास बड़े ही प्रभावकारी ढंग से किया गया है।
- कविता का ओजस्वी राग वीर रस की सृष्टि करता है।
- कविता वीर भावना की सृष्टि करने में पूरी तरह सफल है।
- अलंकारों और वर्णन वैचित्र्य का प्रयोग नहीं किया गया है। कविता फिर भी सरस और स्मरणीय है।
- 'मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी।' इस पंक्ति में अनुप्रास का बड़ा ही सार्थक और प्रभावी प्रयोग किया गया है।
- कविता में हर अंतरा के अंत में 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी' का पुनरावर्तन पाठक के मन में जोश और वीर भावना को धीमा नहीं होने देता है।

विशेष–

यह वीर रस की कविता है जो उस दौर में लिखी गयी जब हिंदी भाषा के साहित्य में छायावाद मुखर था। कविता एक तत्कालीन बुंदेली लोकगीत को आधार बना कर लिखी गयी थी। इस कविता में राष्ट्रीय चेतना का विस्तृत रूप देखने को मिलता है। लोगों में राष्ट्रीय चेतना और स्वाधीनता के लिए उत्साह जगाना इस कविता का लक्ष्य रहा है। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के किसी वीर सेनानी के बलिदानी इतिहास पर लिखी गयी यह सबसे अधिक प्रसिद्ध और पढ़ी जाने वाली कविता है।

बोध प्रश्न–1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1. सुभद्रा कुमारी चौहान के जीवन के बारे में क्या जानते हैं?

.....

.....

.....

2. इस कविता को पढ़ने के बाद लक्ष्मीबाई के बारे में क्या जानकारी हुई? संक्षेप में लिखें

.....

.....

.....

3. 'बूढ़े भारत में भी आई फिर से नयी जवानी थी।' कवयित्री ने भारत को बूढ़ा क्यों कहा? संक्षेप में बतायें।

.....

.....

.....

4. ''किंतु कालगति चुपके–चुपके काली घटा घेर लाई'' इस पंक्ति में किस घटना की ओर संकेत है?

.....

.....

.....

5. सुभद्रा कुमारी चौहान ने लक्ष्मीबाई को 'मर्दानी' क्यों कहा है?

.....

.....

.....

6. लक्ष्मीबाई किन हथियारों से युद्ध करती थीं?

.....

.....

.....

7. इस कविता में किन–किन रजवाड़ों का नाम आया है और क्या बताने के लिए आया है?

.....

.....

.....

8. कविता में अंग्रेजों के अत्याचारों के विषय में क्या बताया गया है?

.....

.....

.....

.....

9. रानी को वीर गति अंग्रेजों के किस सेनापति के साथ युद्ध करते हुए मिली। रानी के वीर गति प्राप्त होने का कारण क्या था? संक्षेप में लिखें।

.....

.....

.....

.....

10. इस कविता में रानी लक्ष्मीबाई को किन–किन अंग्रेज सेनापतियों से लोहा लेना पड़ा? संक्षेप में उनके साथ हुए युद्ध का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

बोध प्रश्न–2

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

i) बचपन में लक्ष्मीबाई को क्या करना अच्छा लगता था?

क) गुड्डा गुड़िया का खेल खेलना ख) खो खो कबडी खेलना
ग) किताबें पढ़ना, घ) सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना।

ii) लक्ष्मीबाई का घोड़ा क्यों अड़ गया था ?

क) घोड़ा थक गया था ख) भूखा था ग) नया था और नाला चौड़ा था
घ) घोड़े को चोट लग गयी थी।

iii) रानी लक्ष्मीबाई को किसकी गाथाएं याद थी?

क) वीर शिवाजी की ख) राणाप्रताप की ग) गांधी जी की
घ) वीर कुंवर सिंह की

iv) वीर गति के समय लक्ष्मीबाई की उम्र क्या थी ?

क) 30 वर्ष ख) 33 वर्ष ग) 43 वर्ष घ) 23 वर्ष

v) सुभद्रा कुमारी चौहान के पिता का नाम क्या था?

क) रामनाथ सिंह ख) रघुनन्दन सिंह ग) राजनाथ सिंह
घ) हरिनाथ सिंह

vi) लक्ष्मीबाई किसकी अवतार थीं?

क) रणचण्डी की अवतार ख) काली की अवतार ग) भवानी,
घ) वीरता की अवतार

vii) नाना लक्ष्मीबाई को क्या कहकर बुलाते थे?

क) मनु ख) दुर्गा ग) छबीली घ) लक्ष्मी

viii) महाराष्ट्र–कुल–देवी का नाम क्या था?

क) दुर्गा ख) काली ग) भवानी घ) रण चंडी

ix) झाँसी का राज्य हड़पने का विचार किसके मन में आया था?

क) डलहौजी ख) जनरल डायर ग) ह्यूरोज घ) लेफ्टीनेंट वाकर

x) मंदरा कौन थी?

क) लक्ष्मीबाई की सखी ख) बहन ग) देवरानी घ) कोई नहीं

xi) अंग्रेज रानियों से लूटे गहने कहां के बाजारों में बेचते थे ?

क) बरेली के बाजार में ख) दिल्ली के बाजार में ग) लंदन के बाजार में
घ) कलकत्ते के बाजार में

xii) लक्ष्मीबाई को कितनी संतानें थीं?

क) कोई नहीं ख) एक ग) दो घ) तीन

xiii) यह कविता किस संग्रह में संकलित है?

क) त्रिधारा ख) मुकुल ग) बिखरे मोती घ) उन्मादिनी

xiv) सुभद्रा कुमारी चौहान को किस ईसवी में जेल जाना पड़ा था?

क) 1931 में ख) 1921 में ग) 1912 में घ) कभी नहीं

xv) सुभद्रा कुमारी चौहान की मृत्यु कैसे हुई?

क) बीमारी से ख) डूबने से ग) हवाई जहाज दुर्घटना में
घ) कार दुर्घटना में

18.3 उपयोगी पुस्तकें

1. त्रिधारा
2. मुकुल तथा अन्य कविताएं
3. मिला तेज से तेज

18.4 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न– 1

1. सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म 1904 में हुआ था। उनके पिता का नाम रामनाथ सिंह था। 1919 में उनका विवाह खंडवा के ठाकुर लक्ष्मण सिंह के साथ हो गया। बाल्य काल में ही उनके भीतर देश प्रेम की भावना पैदा हो गयी थी। 1921 में वे गांधी जी के असहयोग आंदोलन में हिस्सा लेने चली गयी थीं। असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाली वे पहली महिला थीं। 1857 के संग्राम में अंग्रेजों से लोहा लेने वाली झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की रणगाथा को आधार बनाकर उन्होंने एक लम्बी कविता लिखी, जिसके कारण एक राष्ट्रवादी धारा के कवि के रूप में उन्हे खूब प्रसिद्धि मिली। उनकी शैली घटना–वर्णन प्रधान तथा भाषा सरल, ओजपूर्ण और काव्यात्मक है।

2. इस कविता को पढ़ने से यह जानकारी मिलती है कि रानी लक्ष्मी बाई का जन्म मराठा कुल में हुआ था। कानपुर के नाना साहब उनके मुंहबोले भाई थे जो उन्हें छबीली कहते थे। लक्ष्मी बाई अपने पिता की अकेली संतान थीं। बचपन से ही उन्हें बरछी, ढाल, कृपाण और तलवारों के साथ खेलने का शौक था। उनका विवाह झाँसी राज में हुआ था। विवाह के दो वर्ष के बाद ही उनके पति का देहांत हो गया। उन्हें कोई संतान नहीं थी। डलहौजी ने उनका राज्य हड़प लेना चाहा किन्तु रानी ने उससे वीरता पूर्वक युद्ध किया। वे एक कुशल योद्धा और बहादुर महिला थीं। कई युद्धों में अंग्रेजों को पराजित करने के बाद एक बार एक नाले के पास घिर जाने के कारण लड़ते हुए, केवल 23 साल की उम्र में ही वीर गति को प्राप्त हो गयीं।

3. अंग्रेजों का गुलाम होने जाने के कारण भारत वर्ष अपने आप को असहाय महसूस करने लगा था। इसी कारण भारत को बूढ़ा कहा गया है। स्वतंत्रता संग्राम में वीरता पूर्वक अंग्रेजों का मुकाबला शुरू किया, इससे भारत के अन्य हिस्सों मे भी विद्रोह की चेतना जाग्रत हुई। देश में फिर से उमंग का वातावरण हो गया था। इसीलिए उसे नई जवानी का नाम दिया गया है।

4. विवाह के दो वर्ष के अंदर ही लक्ष्मी बाई की मृत्यु हो गयी थी। उन्हें कोई संतान भी नहीं थी। झाँसी राज्य का कोई उत्तराधिकारी नहीं रह गया था। पति की असमय मृत्यु के बाद रानी के जीवन में कोई संतान ना होने के कारण झाँसी पर भी अंग्रेजों का कब्जा हो जाने की आशंका थी। इसे ही कालगति की काली घटना कहा गया है।

5. लक्ष्मीबाई महिला होते हुए भी युद्ध के मैदान में अत्यंत वीरता के साथ मर्दों की तरह साहस, निडरता, और बहादुरी से शत्रुओं से लड़ी थीं। उन्होंने युद्ध के दौरान शत्रुओं की नाक में दम कर दिया था और उनके पराक्रम की तारीफ तो अंग्रेज भी करते थे। उनके इसी अद्‌भुत कौशल तथा शौर्य से प्रभावित होकर लेखिका ने उन्हें 'मर्दानी' कहा है।

6. रानी लक्ष्मीबाई के समय में पैदल, घोड़े और हाथी पर बैठ कर युद्ध किया जाता था। घुड़ सवार वीर लड़ने के लिए ढाल तलवार और बरछी का उपयोग करते थे। रानी लक्ष्मी बाई उस जमाने के सभी हथियारों से युद्ध करना जानती थीं। झाँसी के मैदानों में उन्होनें घोड़े पर बैठ कर तलवार ढाल और बर्छी से युद्ध किया था।

7. इस कविता में लगभग उन सभी राज्यों, रियासतों का नाम शामिल है, जिन पर अंग्रेजों ने कब्जा कर लिया था या करने की कोशिश में लगे थे। दिल्ली, लखनऊ बिठूर,

नागपुर, उदयपुर, तंजौर, सतारा, कर्नाटक, सिंध, पंजाब, बंगाल, मद्रास आदि राज्यों, रियासतों का नाम आया है।

8. कवयित्री ने कविता में अंग्रेजों के अमानवीय अत्याचारों का थोड़े से शब्दों में किन्तु बड़े ही मार्मिक ढंग से वर्णन करते हुए लिखा है कि, अंग्रेज कभी व्यापारी बन कर भारत में आये थे। रजवाड़ों के सामने सहायता के लिए याचना करते थे। वे ही अंग्रेज धीरे–धीरे छल बल से पांव पसारते हुए यहां के रजवाड़ों का राज्य छीनने लगे। ये इतने निर्दय थे कि पहले राज्य पर कब्जा करते थे। फिर राजाओं की हत्या कर देते या जेल में कैद कर लेते और उनकी रानियों के साथ जुर्म जबरदस्ती करते थे। अनुनय विनय कुछ नहीं सुनते थे और उनका सब कुछ लूटकर कलकत्ता के बाजारों में बेच देते थे। यह अपमान रानियों को सहन नहीं होता था, किन्तु अंग्रेज इसमें आनन्द का अनुभव करते थे।

9. कालपी और ग्वालियर में अंग्रजों को पराजित करतें हुए लक्ष्मीबाई आगे बढ़ रही थीं कि अंग्रेजों जनरल स्मिथ अपनी सेना लेकर आ गया। उस समय लक्ष्मी बाई की दो सहेलियां, काना और मंदरा भी युद्ध में रानी का साथ दे रही थीं। इन तीनो नें इतना भीषण युद्ध किया कि स्मिथ भी टिक नहीं सका। लेकिन तभी पीछे से ह्यूरोज अपनी सेना लेकर आ गया। अब रानी पुरी तरह घिर चुकी थी। फिर भी रानी ने जिस किसी तरह मार काट मचा कर ह्यूरोज की सेना से बच कर आगे निकलने में कामयाब हो गयी थीं। लेकिन दुर्भाग्य वश सामने एक नाला पड़ गया जिसमें उनका घोड़ा, जो नया था, पार करने की बजाय वहीं अड़ गया। अब रानी के पास कहीं निकलने का रास्ता न था और अंग्रेजों से अकेले ही युद्ध करते–करते वीर गति को प्राप्त हो गयीं।

10. कविता में जिन तीन अंग्रेज सेनापतियों से लक्ष्मी बाई के भीषण युद्ध का जिक्र है, उनके नाम इस प्रकार हैं–1.वाकर 2. मेजर स्मिथ और 3. ह्यूरोज।

बोध प्रश्न–2

i. घ

ii. ग

iii. क

iv. ध

v. क

vi. घ

vii. ग

viii. ग

ix. क

x. क

xi. घ

xii. क

xiii. क

xiv. ख

xv. घ

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY